

कृपादित (कृपा + दित) m. N. pr. eines Buddha TRIK. 1, 1, 5.

कृपाय् (von कृपा), कृपायते *trauern, jammern; Mitleid haben*: कृपायमाण NIB. 2, 12. कृपायमानस्तु (sic) न ते दग्धुमिच्छामि MBH. 13, 2330. प्रकृत्य च कृपायते 1, 5597. किं कृपायितमस्त्यत्र पुत्र एकत्र कृत्यति *was ist das für ein Jammern?* 3, 337. कृपायति = अर्चयति कर्मन् NAIKH. 3, 14. — Vgl. कृप्य् und कृप्.

— अनु Jmd (acc.) *nachjammern, Mitleid fühlen*: प्रारुदत्तिकल । गवा माता पुरा तात तामिन्द्रो ऽन्वकृपायत MBH. 3, 329.

कृपालु (von कृपा) adj. *Mitleid fühlend, mitleidig* AK. 3, 1, 15. H. 368. MBH. 2, 2294. BHĀG. P. 4, 12, 50. 23, 3. स्रपयो ऽस्य (obj.) कृपालवः 9, 6, 26.

कृपावत् (wie eben) adj. dass. KUMĀRAS. 3, 26.

कृपीट n. P. 8, 2, 18. Vārtt. 1, Sch. 1) *viell. Gestrauch*: नि सुद्वेष्टे वृत्तणामु यत्रा कृपीटमनु तदेकृति RV. 10, 28, 8. *Wald und Brennholz (इन्धन)* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) *Wasser* NAIKH. 1, 12. Uq. 4, 186. TRIK. 3, 3, 92. H. 4. 163. H. an. 3, 158. MED. 1. 40. — 3) *Bauch* Uq. TRIK. H. an. MED.

कृपीटपाल (कृ + पाल) m. 1) *Steuerruder* H. an. 3, 46. MED. 1. 169 (1. केनिपात st. केलितात). HĀR. 226. — 2) *das Meer* H. an. MED. HĀR. — 3) *Wind* ÇABDAR. im ÇKDR.

कृपीटयोनि (कृ + योनि) m. *Feuer* AK. 1, 1, 49. H. 1097.

कृमि und क्रिमि Uq. 4, 123. (Die Schreibart ist so wechselnd, dass z. B. im AV. kaum eine Stelle ist, in welcher nicht die Handschriften sowohl die eine als die andere darbieten; der besseren Uebersicht wegen haben wir Alles unter कृमि zusammengestellt, welche Form sich näher an die der verwandten Sprachen anschliesst.) 1) m. SIDDH. K. 249, b, 3 v. u. a) *Wurm, Made* AK. 2, 3, 13. 2, 6, 2, 12. 3, 1, 51. H. 1202. 21. an. 2, 319. MED. m. 7. HĀR. 163. VS. 24, 30. TS. 5, 5, 11, 1. AV. 2, 31, 1. fgg. 32, 1. fgg. 5, 23, 1. fgg. ÇAT. BR. 5, 4, 1, 2. 14, 9, 2, 14. M. 1, 40. 2, 201. 3, 92. 8, 232. 10, 94. 11, 70. 12, 42. 56. 59. MBH. 1, 1796. 1798. 14, 1136. SUÇR. 1, 4, 20. 133, 12. 172, 7. 2, 509, 11. fgg. (Aufzählung der versch. Arten). BHARTĒ. 1, 63. BHĀG. P. 3, 31, 6. 27. 5, 26, 18. *Spinne* H. 1210. तिरस्क्रियते कृमित्तुजालैः — गवाताः RAGH. 16, 20. *Ameise*; vgl. कृमिपर्वत, कृमिशैल. — b) *die von einem Insect herrührende rothe Farbe* लाला H. an. MED. VIÇVA im ÇKDR. — c) N. pr. eines Sohnes von Uçinara HARIV. 1676. 1678. VP. 444. von Bhaḡamāna HARIV. 2002. VP. 424, N. 2. N. pr. eines Asura, des Bruders von Rāvaṇa (खर) MED. VIÇVA im ÇKDR. eines Nāgarāḡa VJUTP. 84. — 2) f. N. pr. der Gemahlin Uçinara's und Mutter Kṛmi's HARIV. 1673. — 3) adj. = कृमिल MED. VIÇVA. — Viell. von क्रम्; vgl. क्रमि.

कृमिक (von कृमि) m. *ein kleiner Wurm* MBH. 1, 1800. BHĀG. P. 3, 31, 27. कृमिकाण्टक (कृमि + कण्ट) n. *Feind der Würmer, N. verschiedener Pflanzen*: 1) *Ficus glomerata* H. an. 3, 3. MED. k. 226. — 2) = चित्रा H. an. = चित्राङ्ग MED. — 3) = विडङ्ग H. an. MED.

कृमिकर् (कृमि + कर्) m. *ein best. giftiges Insect* SUÇR. 2, 288, 14.

कृमिकर्ण (कृमि + कर्ण) und कर्णक m. *Bildung von Maden im Ohr* SUÇR. 2, 361, 2. 362, 16. 368, 5.

कृमिकोश und कृमिकोष (कृमि + को) m. *Cocon: कृमिकोशोत्थ* aus einem Cocon hervorgehend, seiden AK. 2, 6, 2, 13. H. 670 (ष).

कृमिग्रन्थि (कृमि + ग्रन्थि) m. *eine best. Krankheit des Auges, welche dem Entstehen von Würmern an der Verbindungsstelle von Augenlid und Wimpern oder Lid und Apfel zugeschrieben wird*, SUÇR. 2, 307, 10. 334, 1.

कृमिघातिन् (कृमि + घाति) 1) adj. *Würmer vertreibend*. — 2) subst. *ein best. Arzneimittel*, viell. = विडङ्ग SUÇR. 2, 434, 11 (क्रमि).

कृमिघ्न (कृमि + घ्न) 1) adj. *Würmer vertreibend* SUÇR. 2, 368, 5. 311, 5. — 2) subst. N. verschiedener Wurm-mittel; n. SUÇR. 2, 431, 11. 324, 1. masc. = विडङ्ग AK. 2, 4, 2, 25. *Zwiebel* (पलाण्डु); = कोलकन्द; = पारिमह (s. निम्ब); = भल्लातक RĀGĀN. im ÇKDR. कृमिघ्ना f. *Gelbwurz* (कृ-रिद्रा) BHĀVAPR. im ÇKDR. कृमिघ्नी f. = धूमपत्रा (lies: धूमपत्रा) und विडङ्ग RĀGĀN. im ÇKDR. = सोमराज्ञी ÇABDAR. ebend. क्रमिघ्न (sic) n. = विडङ्ग RATNAM. im ÇKDR.

कृमिघ्न (कृमि + घ्न) 1) adj. *von einem Wurm erzeugt*: कोशियं कृमिघ्नम् PANKĀT. 1, 107. — 2) f. *die lila genannte rothe Farbe eines Insects* H. 686. RĀGĀN. im ÇKDR. — 3) n. *Aloeholz* AK. 2, 6, 2, 28. H. 640. Vgl. कृमिघ्नघ.

कृमिघ्नघ (कृमि + घ्न) n. *Aloeholz* H. 640, Sch. RĀGĀN. im ÇKDR. — Vgl. कृमिघ्न.

कृमिघ्नल (कृमि + घ्नल) m. *das in einer Muschel lebende Thier* RĀGĀN. im ÇKDR. unter कृमिशङ्क.

कृमिर्ण (von कृमि) adj. *mit Würmern versehen* gaṇa पामादि zu P. 5, 2, 100. — Vgl. कृमिल.

कृमिदत्तक (कृमि + दत्त) m. *der Wurm am Zahn, caries* SUÇR. 1, 93, 4. 2, 127, 5.

कृमिपर्वत (कृमि + पर्व) m. *Ameisenhaufen* H. 970. — Vgl. कृमिशैल. कृमिभल (कृमि + भल) m. N. einer Höhle (s. कृमिभोजन) VP. 208.

कृमिभोजन (कृमि + भोज) 1) adj. *dessen Speise Würmer bilden* BHĀG. P. 5, 26, 18. MĀRK. P. 8, 217. — 2) m. N. einer Höhle VP. 207. BHĀG. P. 5, 26, 7, 18.

कृमिमत् (von कृमि) adj. *mit Würmern versehen, — bedeckt* gaṇa पवादि zu P. 8, 2, 9. देशम् GOBH. 4, 9, 12.

कृमिरिपु (कृमि + रिपु) m. *Feind der Würmer, N. einer Pflanze* (s. विडङ्ग) ÇABDAR. im ÇKDR.

कृमिरोग (कृमि + रोग) m. *Wurmkrankheit* SUÇR. 2, 509, 4.

कृमिल (von कृमि) 1) adj. f. *verminosus, durch Maden verunreinigt*; von Flüssigkeiten SUÇR. 1, 191, 7. 14. 224, 5. — 2) f. *या* a) *eine mit vielen Kindern gesegnete Mutter* H. 538. — b) N. pr. einer nach Kṛmi benannten Stadt HARIV. 1678.

कृमिलाश्र (कृमिल + श्र) m. N. pr. eines Sohnes von Bāhjaçva HARIV. 1779.

कृमिलिका (von कृमिल) f. *roth gefärbter* (vgl. कृमि 1, b) *leinener Zeug* VJUTP. 212.

कृमिवर्ण (कृमि + वर्ण) rothes (vgl. कृमि 1, b) *Tuch* VJUTP. 212.

कृमिवारिरुह (कृमि + वारि) m. *das in einer Muschel lebende Thier* RĀGĀN. im ÇKDR. unter कृमिशङ्क.

कृमिवृत्त (कृमि + वृत्त) m. *eine best. Pflanze* (कोपाश m.) BHĀVAPR. im ÇKDR.